अध्याय 35

बेतेल को वापसी

याकूब के जीवन का बड़ा भाग यात्रा में बीता था। उसकी माता ने उसे निर्देश दिए कि वह "उठे" और "भागे" (27:43), और उसके पिता ने, यह कहते हुए, इसे दोहराया "उठकर पद्दनराम को जा" (28:2)। हारान में बीस वर्ष रहने के बाद, परमेश्वर के दूत ने ज़ोर देकर उसे कनान लौट जाने के लिए कहा (31:13)। लेख के इस खण्ड में, याकूब को परमेश्वर से ऐसा ही "उठने" और "जाने" का एक और निर्देष मिलता है (35:1)। उसने कुलपति को उसकी आराधना करने के लिए बेतेल लौट जाने को कहा।

पराए देवाताओं को निकाल फेंकने और अपने आप को शुद्ध करने के पश्चात (35:2-4), याकूब के घराने ने शकेम से बेतेल की यात्रा की। वहाँ परमेश्वर ने एक बार फिर याकूब को दर्शन देकर उससे वाचा के वायदों की पुष्टि की (35:5-15)। यह काफ़िला बाद में बेतेल छोड़कर, दक्षिण में हेब्रोन की ओर चल निकला। यह यात्रा निश्चय ही याकूब के हृदय के लिए बहुत दुःख लेकर आई। उसकी प्रिय पत्नि राहेल की मृत्यु उसके बारहवें पुत्र बिन्यामीन को जन्म देते हुए हुई (35:16-21)। फिर याकूब के सबसे बड़े बेटे रूबेन ने उसकी रखैल बिल्हा के साथ कुकर्म किया (35:22)। आखिर में, याकूब के पिता इसहाक का देहांत हेब्रोन में हुआ (35:27-29)। इन सारी दुःखद घटनाओं के मध्य, लेख याकूब को अनेक वंशज देने के द्वारा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की पुष्टि करता है। उसके बारह पुत्रों की सूची दी गई है (35:22-26); इन्हीं पुरुषों से इस्राएल राष्ट्र का जन्म हुआ।

याकूब के परिवार का पवित्रीकरण: सभी पराए देवताओं का अलग करना (35:1-4)

[1]तब परमेश्वर ने याक़ूब से कहा, "यहाँ से निकल कर बेतेल को जा, और वहीं रह; और वहाँ परमेश्वर के लिये वेदी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था।" [2]तब याकूब ने अपने घराने से, और उन सब से भी जो उसके संग थे, कहा, तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो; [3]और आओ, हम यहाँ से निकल कर बेतेल को जाएँ; वहाँ मैं परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाऊँगा, जिसने संकट के दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं चलता था, उस में मेरे संग रहा। [4]इसलिये जितने पराए देवता

उनके पास थे, और जितने कुण्डल उनके कानों में थे, उन सभों को उन्होंने याकूब को दिया; और उसने उनको उस बांज वृक्ष के नीचे, जो शकेम के पास है, गाड़ दिया।

आयत 1. परमेश्वर, जिसने याकूब को बेतेल में दर्शन दिया था (28:12-17), उसके सामने एक बार फिर इस प्रकार की चुनौती रखी: **"यहाँ से निकल कर बेतेल को जा, और वहीं रह।"** बेतेल शकेम से लगभग एक हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है, इसलिए परमेश्वर की आज्ञा "ऊपर को जा" भौगोलिक माप के बिल्कुल उपयुक्त था। परमेश्वर ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, **"वहाँ परमेश्वर के लिए वेदी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था।"** पुरखे अपनी यात्रा के दौरान प्रायः वेदियाँ बनाया करते थे (12:7, 8; 13:18; 22:9; 26:25; 33:20), परन्तु यही एक ऐसा प्रमाण है, जिसमें परमेश्वर ने किसी पुरखे को यह काम करने को कहा।[1] कहने का तात्पर्य यह है कि, परमेश्वर का उद्देश्य याकूब को यह स्मरण कराना था कि वह अपने धर्म के प्रति अपने उस प्रतिज्ञा को पूरी करे जो उसने एसाव के क्रोध से बचने के लिए हारान कि यात्रा के समय की थी (28:20-22)।

आयत 2. जब **याकूब** को इसकी आज्ञा मिली, उसने तत्परता से **अपने घराने** (पत्नियों, बच्चों और सेवकों) **और उन सबसे भी जो उसके संग थे** (बंदी विधवाओं, बच्चों और सेवकों से जो शकेम से लाए गए थे) कहा उनके बीच में जो **पराए देवता** हैं, उन्हें **निकाल फेंके**। इसमें शामिल था "गृह देवता" जिसे राहेल ने अपने पिता के घर से चुराया था (31:19), इसके अलावा उन्हें भी जो उसके घराने या सेवकों के पास पाए जाएँ, साथ ही साथ उन्हें भी जिन्हें शकेम के लोग अपने साथ ले आए थे। झूठे देवताओं को निकाल फेंकना सच्चे परमेश्वर कि आराधना करने का प्रमाण है, इसी व्यवस्था का विवरण बाद में दस आज्ञा में किया गया (निर्गमन 20:3-6; व्यव. 5:7-10; देखें यहोशु 24:14; न्यायियों 10:16; 1 शमूएल 7:3, 4)

याकूब ने सबसे अपने अपने को **शुद्ध करने** के लिये भी कहा। इस प्रकार यह परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिये ज़रूरी समझा जाने लगा (देखें निर्गमन 29:4; 30:19-21) आराधना की तैयारी में **वस्त्र** का धोना और **बदलना** हमेशा शुद्धिकरण को दर्शाता है (लैव्य. 6:10, 11; 2 शमूएल 12:20; देखें निर्गमन 19:10, 11) इस प्रकार की शुद्धि महत्वपूर्ण थी क्योंकि शकेम में सारे पुरुषों को घात करने और उनके फसलों कि लूटपाट के समय, याकूब की मंडली में बहुत से लोग मरे हुओं के शरीर और लहू को छूकर अशुद्ध ठहरे (देखें गिनती 31:19, 20, 24)। घात किए गए मनुष्यों के परिवार वाले भी मरे हुओं को छूने के कारण अवश्य ही अशुद्ध ठहरे।

आयत 3. याकूब ने अपने साथ यात्रा करने वाले लोगों को **बेतेल** जाने और **वहाँ पर परमेश्वर के लिये वेदी** का यह कारण बताया कि **उसने संकट के दिन में उसकी सुनी थी**। याकूब कई वर्षों से, उस शपथ के बारे में सोचता रहा जो उसने एसाव से बचकर भागने के समय बेतेल में खाई थी: "यदि परमेश्वर मेरे संग

रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे ... तो वह मेरा परमेश्वर ठहरेगा।" बाद में उसने परमेश्वर को उन सब वस्तुओं का दशमांश देने की प्रतिज्ञा की जो आशीष के रूप में उसे मिली थी (28:20-22) इसलिये जहाँ कहीं भी वह जाता था, परमेश्वर उसके साथ विश्वासयोग्य बना रहा, और अब याकूब कहता है कि उसे अपनी प्रतिज्ञा अवश्य ही पूरी करनी चाहिए।

आयत 4. याकूब के मंडली के पास **जितने पराए देवता थे और जितनी बालियाँ उनके कानों में थी वे सब उन्होंने याकूब को दे दिया।** संभवतः बालियाँ कीमती धातु की बनी थी जिन्हें याकूब के पुत्रों ने शकेम के लूट के समय रख लिया था (34:29), और हो सकता था कि उन वस्तुओं में पराए देवता को मानने वाले लोगों के धार्मिक महत्त्व की पहचान हो (देखें न्यायियों 8:24-27; होशे 2:13)।

मूरतों और कुण्डलों को लेकर, **याकूब ने उन्हें बांज वृक्ष के नीचे जो शकेम में था गाड़ दिये**। मूर्तिपूजा को पूरी तरह से खत्म करने में यह एक महत्वपूर्ण कदम था। मूर्तियों के साथ साथ "जो भी उनके पास थे जिसे ढालकर दूसरी वस्तु बनाई जा सकती थी दे दिया।"[2] हो सकता है कि कुण्डल सोने के बने थे, जैसा कि हम निर्गमन 32:2-4 में पाते हैं कि कुण्डलों का इस्तेमाल सोने का बछड़ा बनाने में किया गया था।

परमेश्वर का दर्शन और परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पुनः पुष्टि (35:5-15)

[5]तब उन्होंने कूच किया: और उनके चारों ओर के नगर निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया, कि उन्होंने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया। [6]सो याकूब उन सब समेत, जो उसके संग थे, कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेतेल भी कहलाता है। [7]वहाँ उसने एक वेदी बनाई, और उस स्थान का नाम एलबेतेल रखा; क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर वहीं प्रगट हुआ था। [8]और रिबका की दूध पिलानेहारी धाय दबोरा मर गई, और बेतेल के बाँझ वृक्ष के निचले भाग में उसको मिट्टी दी गई, और उस बाँझ वृक्ष का नाम अल्लोनबक्कूत रखा गया। [9]फिर याकूब के पद्दनराम से आने के पश्चात परमेश्वर ने दूसरी बार उसको दर्शन देकर आशीष दी। [10]और परमेश्वर ने उससे कहा, अब तक तेरा नाम याकूब रहा है, पर आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा, तू इस्राएल कहलाएगा [11]फिर परमेश्वर ने उससे कहा, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ, तू फूले - फले और बढ़े; और तुझ से एक जाति वरन जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। [12]और जो देश मैं ने अब्राहम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूँ, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूंगा। [13]तब परमेश्वर उस स्थान में, जहाँ उसने याकूब से बातें कीं, उसके पास से ऊपर चढ़ गया। [14]और जिस स्थान में परमेश्वर ने याकूब से बातें कीं, वहाँ याकूब पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया, और उस पर

अर्घ देकर तेल डाल दिया। 15जहाँ परमेश्वर ने याकूब से बातें की, उस स्थान का नाम उसने बेतेल रखा।

आयत 5. अंततः, परमेश्वर की आज्ञा पर चल याकूब और उसके घराने ने शकेम से कूच कर लिया। याकूब इस बात से डर गया कि उसके पुत्रों ने जो क्रूरता शकेम के लोगों के साथ दिखाई थी (34:30), कनानी और परिज्जी उसके और उसके लोगों को देखकर उनपर चढ़ाई करेंगे। मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो, याकूब के पास अपने चारों ओर के देशों से डरने का एक उचित कारण था, क्योंकि उस समय कनानी लोगों की तुलना में उसके मंडली के लोगों की संख्या बहुत कम थी। यद्यपि याकूब डरा हुआ तो था, परन्तु उसके आस-पास के लोगों की प्रतिक्रिया उसकी सोच के विपरीत थी। जैसे जैसे **उन्होंने कूच किया, उनके चारों ओर के नगरों में भय छा गया, वे उनपर चढ़ाई करने में सफल नहीं हो पाए।** एक बार फिर, परमेश्वर अपने लोगों को ईश्वरीय सुरक्षा प्रदान करने में विश्वासयोग्य बना रहा। उस देश के निवासी **याकूब के पुत्रों का पीछा नहीं कर पाए**। कनान देश में प्रवेश करने से पहले इस्राएलियों के लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञा उन्हें ईश्वरीय छुटकारे के अनुभव का ज्ञान करता है (निर्गमन 23:27, 28; व्यव. 7:20-24)

आयत 6. इस आयत में नगर का पुराना नाम इस्तेमाल किया गया है जहाँ पहुँचकर **याकूब और वे सब** जो उसके संग थे, कहा, उनके पूर्वज **कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेतेल भी कहलाता है**। यह जानकारी 28:19 के आगे दोहराई गई है। हो सकता है लेखक ने परमेश्वर के साथ याकूब के उस स्थान पर हुए पिछले अनुभवों का स्मरण कराने के लिए दो नामों का इस्तेमाल किया हो। (28:10-22)

आयत 7. परमेश्वर की आज्ञा पर चल (35:1), **याकूब ने एक वेदी बनाई, और उस स्थान का नाम एल बेतेल रखा**। जब उस स्थान पर याकूब दोबारा आया, फिर से उसने उसका नाम बेतेल ("परमेश्वर का घर") रखा, इसलिये यह एल बेतेल ("परमेश्वर के घर का परमेश्वर") हुआ। नाम का इस तरह बदलना परमेश्वर पर याकूब के नए दृष्टिकोण को दर्शाता है, **क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर वहीं प्रगट हुआ था**। उसने जाना कि इस स्थान पर कोई पवित्रता नहीं पाई जाती थी; परन्तु केवल इतना कि यह वही स्थान है जहाँ पर पहली बार उसने एक सच्चे परमेश्वर से भेंट की। परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया और प्रतिज्ञा की, कि जहाँ कहीं वह जाएगा उसके साथ रहेगा। कई वर्ष बीतने के पश्चात, अब, याकूब ने देखा कि उसकी कई गलतियों के बावजूद परमेश्वर ने अपने सारे वायदे पूरे किये हैं। उस स्थान का नाम पुनः रखा जाना यह दर्शाता है कि परमेश्वर के प्रति याकूब की समझ अधिक गहरी होती गयी।

आयत 8. इन सब बातों के पश्चात लेखक ने एक जिज्ञासापूर्ण विवरण दिया। उसने लिखा कि **दबोरा, रिबका की धाय, मर गई, और बेतेल के बांज वृक्ष के**

निचले भाग में [दक्षिण कि ओर] **उसको मिट्टी दी गई।** उस स्थान का नाम अल्लोनबक्कूत रखा गया, जिसका अर्थ "रुलाई का बांज" है। इस जानकारी को देना एक अनोखी बात है क्योंकि लगभग तीस वर्ष पहले याकूब को हारान से भेजने के पश्चात पहली बार यहाँ पर रिबका के बारे में वर्णन किया गया है (27:42-28:5; 29:12) उत्पत्ति का वृत्तान्त हमें हर एक पुरखे की मृत्यु और उनके गाड़े जाने के बारे में सरलता से विवरण देता है (25:7-11 में अब्राहम; 35:28, 29 में इसहाक; और 49:33 में याकूब) इसके अतिरिक्त, वृत्तान्त में दो पुरखों की पत्नियों की मृत्यु और मिट्टी दिए जाने (23:1-20 में सारा और 35:19 में राहेल) के बारे में जानकारी मिलती है। रिबका इस नियम से बिल्कुल हटकर है; जिसके बारे में दूसरी बार संक्षिप्त सार केवल 49:31 में पाया जाता है। इसका कारण हो सकता है कि रिबका अपने प्रिय पुत्र को दोबारा कभी नहीं देख पाई। जिस समय उसकी मृत्यु हुई उस समय वह हारान में था और उसे मिट्टी देने पर उसमें शामिल नहीं हो पाया, जब याकूब कनान वापस आया, उसकी माता की मृत्यु हो चुकी थी और उसे मिट्टी दी जा चुकी थी।

"रिबका की धाय" का परिचय वृत्तान्त में पहले ही दिया जा चुका था, वह तब हारान को छोड़कर कनान में रिबका की सेवा टहल के लिए आई जब रिबका अपनी नई ज़िम्मेदारी के साथ इसहाक की पत्नी बनकर आई (देखें टिप्पणी 24:59 का) धाय का नाम "दबोरा" ही था इस सच्चाई पर लेखक 35:8 तक गम्भीर बना रहा। रिबका की धाय को मिट्टी दिये जाने पर शामिल होकर याकूब ने अपनी मृत माता के लिये आदर दिखाया।

आयतें 9, 10. याकूब के पद्दनराम [हारान] **से आने के पश्चात परमेश्वर ने उसे दूसरी बार दर्शन दिया** यह बात अस्पष्ट है। परमेश्वर का इस पुरुष के साथ शकेम में बात करने के पश्चात दूसरी बार प्रगट होना हो सकता है (35:1) अन्यथा, इस सन्दर्भ का कई वर्ष पहले बेतेल में हुए दर्शन के समान होने की संभावना अधिक हो सकती है (28:10-17) परन्तु, इस अवसर पर परमेश्वर ने याकूब से पिछले दिनों जो कहा था उसकी पुनः पुष्टि की, उसे बढ़ाया और उसे पूरा किया। पहले, उसे **आशीष दी** और लगातार देते चला गया जैसे कि **उसका नाम याकूब था**, लेकिन **अब वह इस नाम से कभी भी बुलाया नहीं जाएगा।** जबकि परमेश्वर ने **उसका नाम इस्राएल रखा**, जो कि उस पुरुष में आए बदलाव के अनुसार बिल्कुल सही था (32:28) इस बात ने दर्शाया कि परमेश्वर ने, अपने अनुग्रह के कारण याकूब को नहीं छोड़ा; और यह भी माना गया कि वह समय आएगा, जब लोग उसके वंश को उस देश में जिसे देने कि प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की थी "इस्राएल" (यहोशू 3:17; 8:24; 13:6) या "इस्राएली लोग" (1 शमूएल 2:14; 14:21; 29:1) कहकर बुलायेंगे।

आयतें 11-13. याकूब के साथ अब्राहम से की गई अपनी वाचा को फिर से दोहराने के साथ ही **परमेश्वर** ने याकूब को अन्य आशीषें भी दीं। उसने अपनी पहचान **सर्वशक्तिमान ईश्वर** के रूप में कराई (देखें 17:1, 2) और उस पुरुष से कहा **फूलो फलो और बढ़ो।** यह वही आज्ञा है जो आदम और हव्वा को दी गई थी

(1:28), जो नूह और उसके पुत्रों को भी दी गई (9:1), और इसहाक द्वारा उसके छोटे बेटे को हारान जाने के समय मिली थी (28:1-3) यह आदेश विचित्र लगता है क्योंकि याकूब के पहले ही से ग्यारह पुत्र और एक पुत्री थी, और राहेल शीघ्र ही बिन्यामीन को जन्म देने वाली थी (35:16-19) एक बार फिर, परमेश्वर का वचन फूलो फलो और बढ़ो याकूब के बच्चों और उसके वंश के लिए सर्व सामान्य आशीष मानी गई। समय आने पर **वे एक जाति और जातियों की मंडली** कहलायेंगे और **उसके वंश में राजा उत्पन्न होंगे** (35:11; देखें 17:4-6, 16)। अंत में, **जिस देश** को देने कि प्रतिज्ञा परमेश्वर ने **अब्राहम और इसहाक** से की थी (17:7, 8; 26:3), अब उसने उसे याकूब **और उसके वंश** को देने की शपथ **खाई** (35:12; देखें 28:4) फिर, जिस प्रकार 17:22 में "परमेश्वर अब्राहम से बातें कर ऊपर चढ़ गया" ठीक उसी प्रकार **परमेश्वर** याकूब से बातें कर **ऊपर चढ़ गया** (35:13)।

आयत 14. बेतेल में पहली बार पहुँचने पर, **याकूब** ने एक वेदी बनाई (35:1, 7) अब परमेश्वर का दर्शन पाकर उसने **उस स्थान पर एक खम्भा खड़ा किया जहाँ पर परमेश्वर ने उससे बातें की थी**। तब याकूब ने **पत्थर के उस खम्भे** पर **अर्घ दिया**। उत्पत्ति में अर्घ देने का यह एक मात्र विवरण है, यद्यपि यह आगे चलकर इस्राएलियों की आराधना में सामान्य रूप से इस्तेमाल किया जाने लगा (निर्गमन 29:40, 41; लैव्य. 23:13; गिनती 4:7; 6:15; 15:5) अर्घ देने के स्थान पर, बाद में याकूब ने उस खम्भे पर तेल डालकर उसे पवित्र किया (देखें 28:18)।

आयत 15. परमेश्वर के दर्शन से याकूब का जीवन बदल गया; यद्यपि इस समय उसने बेतेल को एक "अद्भुत" स्थान नहीं कहा (देखें 28:17), फिर भी निश्चय ही उसने उसे उस रूप में देखा। संक्षिप्त रूप में, वचन बताता है कि, **जहाँ परमेश्वर ने याकूब से बातें की, उस स्थान का नाम उसने बेतेल रखा**। खम्भे को पवित्र करने की रीति और उस स्थान का नाम दोबारा रखना उसके लिए महत्वपूर्ण बात थी, जबकि उसके आसपास रहने वाले लोग वर्षों से उसके इस अनुभव को नहीं जान पाए होंगे और इस बात से अनभिज्ञ रहे होंगे कि उसने उसका नाम बेतेल रख दिया है। और फिर, क्योंकि जब याकूब को पहली बार परमेश्वर का दर्शन मिला, तब उसकी पत्नियाँ और बच्चे वहाँ उपस्थित नहीं थे, वे परमेश्वर के दर्शन के महत्व का अनुभव नहीं कर पाए। एक जवान पुरुष जो अपनी जान बचाने के लिए मृत्यु के डर से अपने भाई से भाग रहा था, बेतेल को छोड़कर हारान की ओर बढ़ चला सिर्फ़ परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा के साथ कि वह उसके साथ रहेगा और उसकी यात्रा में उसे आशीष देगा। परमेश्वर की आशीषों का बहुतायत से अनुभव करने के पश्चात वह एक बार लौटकर फिर उसी स्थान पर आ गया जहाँ पर परमेश्वर की प्रतिज्ञा की गई थी। इन सब बातों से वह और उसका घराना सुनिश्चित कर पाए कि सचमुच यह बेतेल: अर्थात् "परमेश्वर का घर" है।

बेतेल से कूच के पश्चात (35:16-29)

बिन्यामीन को जन्म देते राहेल की मृत्यु (35:16-21)

[16]फिर उन्होंने बेतेल से कूच किया, और एप्राता थोड़ी ही दूर रह गया था, कि राहेल को बच्चा जनने की बड़ी पीड़ा उठने लगी। [17]जब उसको बड़ी बड़ी पीड़ा उठती थी तब धाय ने उससे कहा, "मत डर; अब की भी तेरे बेटा ही होगा।" [18]तब ऐसा हुआ, कि वह मर गई, और प्राण निकलते निकलते उसने उस बेटे का नाम बेनोनी रखा; पर उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा। [19]यों राहेल मर गई, और एप्राता, अर्थात् बैतलहम के मार्ग में, उसको मिट्टी दी गई। [20]याकूब ने उसकी कब्र पर एक खम्भा खड़ा किया: राहेल की कब्र का वही खम्भा आज तक बना है। [21]फिर इस्राएल ने कूच किया, और एदेर नामक गुम्मट के आगे बढ़कर अपना तम्बू खड़ा किया।

आयत 16. बेतेल से कूच करने के पश्चात, याकूब और उसका घराना दक्षिण में **एप्राता** अर्थात् "बैतलहम" की ओर गए (35:19) वे वास्तव में बेतेल से हेब्रोन तक पहाड़ी देश से होते हुए उत्तर/दक्षिण मार्ग की ओर बढ़े, जहाँ इसहाक रहता था (35:27) वचन यह नहीं बताता कि जब **राहेल** बिन्यामीन **को जन्म देने वाली थी** तब वे एप्राता की ओर कितनी **दूरी तक** चले; परन्तु तब भी उस स्थान से कुछ दूरी रह गई थी (48:7) बाद की एक आयत से पता चलता है कि वह स्थान सेलसह है इस भूमि को बिन्यामीन गोत्र को बाँट दिया गया था (1 शमूएल 10:2)[3] इसलिये, बिन्यामीन के जन्म के साथ उसका नाम इस स्थान से जुड़ गया। सेलसह रामा के नज़दीक था (यिर्म. 31:15), जो उत्तरी यरूशलेम से लगभग पाँच मील की दूरी पर था।

जैसे जैसे याकूब का घराना साथ साथ आगे बढ़ता रहा, राहेल को बच्चा जनने की **बड़ी पीड़ा** उठने लगी। पुराने समय में गर्भधारण एक बहुत ही कठिन अवस्था होती थी, और उस पर गधे या ऊँट पर बैठ कर चलना न केवल जच्चा की पीड़ा को बढ़ाता बल्कि बच्चा जनने की प्रक्रिया को भी जटिल बना देता था।

आयत 17. जब राहेल को बच्चा जनने की बड़ी पीड़ा उठने लगी तब धाय ने उसे यह कहके ढाढ़स बंधाने का प्रयास किया कि, **"मत डर अब की भी तेरा बेटा ही होगा"** (देखें टिप्पणी 30:24) जचकी के पहले शिशु के लिंग निर्धारण करने की इस स्त्री की योग्यता का अर्थ बच्चे का जन्म पैर की तरफ़ से हो सकता था।

आयत 18. प्रक्रिया इतनी कठिन थी कि राहेल की मृत्यु की घड़ी आ गई; **तब ऐसा हुआ, कि वह मर गई, और प्राण** [נַפְשָׁ, *नेफेश*] **निकलते निकलते उसने उस बेटे का नाम बेनोनी रखा** जिसका अर्थ "मेरा शोक मूल पुत्र"[4] है। परन्तु, **उसके पिता** के पास अपनी प्रिय पत्नी के अंतिम संतान के लिए कुछ और ही नाम था। उसने **उसका नाम बिन्यामीन** रखा, जिसका अर्थ "दाहिने हाथ का पुत्र"[5] है। यहूदी मत के अनुसार, दाहिने हाथ की ओर, सामर्थ्य और आदर का प्रतीक माना

जाता था। इस सन्दर्भ में, इसका अभिप्राय अवश्य यह था कि बिन्यामीन ऐसा पुत्र था जिस पर याकूब निर्भर हो सके "अपने सुख और सहारे के लिये या एक ऐसा पुत्र जिसका जन्म घराने के भविष्य के लिये बड़ी समृद्धि का एक प्रतीक हो।"[6] बिन्यामीन ही ऐसा पुत्र था जिसका नाम उसके पिता के द्वारा रखा गया था।

आयत 19. याकूब ने दोबारा, उसकी माता कि धाय को खोने का बड़ा दुःख उठाया (35:8), और अब उसने एक और मृत्यु को देखा **राहेल**, उसकी प्रिय पत्नी, **मर गई**; और उसके मृत शरीर को **एप्राता (जो बैतलहम है)** के **मार्ग पर मिट्टी दी गई।** शकेम के पुरुषों कि हत्या और दबोरा को मिट्टी देने के पश्चात, राहेल की मृत्यु एक और बड़ी दुःखद घटना थी (48:7) जिससे दुःखों का पहाड़ सा आ गया और याकूब को उन्हें सहना था। एक और बड़ी निराशाजनक बात भी यहाँ देखी गई: राहेल ने एक बार कहा कि यदि वह संतान उत्पन्न न कर पाए तो मर जाएगी (30:1), और अब वह अपने दूसरे पुत्र को जन्म देते हुए मर गई जिसकी कामना वह कई वर्षों से कर रही थी (30:22-24)।

आयत 20. राहेल की याद में, **याकूब ने उसके कब्र पर एक खम्भा खड़ा किया**; और उत्पत्ति के लेखक ने बताया कि **उसके दिनों** में भी **राहेल के कब्र का खम्भा** देखा जा सकता था।

आयत 21. इस दुःख भरे अनुभव के पश्चात, फिर **इस्राएल** (याकूब) ने कूच किया और **एदेर नामक गुम्मट के आगे बढ़कर अपना तम्बू खड़ा किया।** यहूदी विचार מִגְדַּל־עֵדֶר *(मिग्दल एदेर)* का अर्थ या तो "झुण्ड का गुम्मट" या "एदेर का गुम्मट" होता है। इस नाम कि समानता पवित्र शास्त्र में केवल मीका 4:8 में मिलती है, जहाँ पर इसकी तुलना "सियोन कि पुत्री की पहाड़ी [עֹפֶל, *ओपेल]"* के साथ की गई है। "ओपल पहाड़ी" यरूशलेम का दक्षिणी विस्तार है, और "सियोन" नगर में किसी पहाड़ी का दूसरा नाम भी हो सकता है। कभी कभी स्वयं यरूशलेम को ही "सियोन" कहा जाता है। मृत राहेल को मिट्टी देने के पश्चात वह स्थान "बिन्यामीन" के नाम से जाना गया, फिर याकूब और उसके घराने ने दक्षिण की ओर कूच किया और यरूशलेम के दक्षिणी भाग के आगे बढ़कर अपना तम्बू खड़ा किया।

याकूब की रखैल के साथ रुबेन का कुकर्म (35:22)

[22]जब इस्राएल उस देश में बसा था, तब एक दिन ऐसा हुआ कि रूबेन ने जा कर अपने पिता की रखेली बिल्हा के साथ कुकर्म किया; और यह बात इस्राएल को मालूम हो गई। याकूब के बारह पुत्र हुए।

आयत 22. जब इस्राएल (जो पहले याकूब कहलाता था) उस देश में जो यरूशलेम के दक्षिण प्रान्त में था, रहने लगा, तो **रुबेन** का उसके **पिता की रखेली बिल्हा** के साथ लैंगिक सम्बन्ध था। यद्यपि वचन उसके ऐसे करने के कारणों के बारे में नहीं बताता, परन्तु इसके कई संभावनाओं पर विचार व्यक्त किये गये।

पहला, ऐसा हो सकता है कि रुबेन, याकूब का जेठा पुत्र, बिल्हा के प्रति बुरी लालसा रखता था। अवसर पाकर उसने उसके साथ कुकर्म किया।

दूसरा विचार यह है कि राहेल उसके पिता की सबसे प्रिय पत्नी थी यह बात रुबेन को बहुत खटकती थी जबकि उसकी माता लिआ उसे अप्रिय थी (देखें 29:30-32) इसलिये, राहेल की मृत्यु के पश्चात वह चाहता था कि निश्चय ही उसकी जगह उसकी माता लिआ को मिले राहेल की धाय बिल्हा को नहीं। बाइबल के समय में एक पति उस स्थिति में अपनी पत्नी या रखैल के साथ यौन सम्बन्ध बनाने से बचता था जब वह किसी दूसरे पुरुष से दूषित हो चुकी हो। बहुत सम्भव है कि रुबेन के इस कौटुम्बिक व्यभिचार के कारण याकूब ने फिर बिल्हा से यौन सम्बन्ध नहीं रखा होगा।

तीसरा और सबसे तार्किक विचार है कि रुबेन अपने पिता पर अधिकार जमाने का दावा कर रहा था। बाइबल के इतिहास में, किसी राजा की पत्नी के साथ आंतरिक सम्बन्ध रखना उस पुरुष द्वारा राजपाट को हथियाने के प्रयास करने की एक नीति होती थी (देखें 2 शमूएल 3:6-8; 12:8, 11; 16:21, 22; 20:3; 1 राजा 2:22; 20:3-7)। इस प्रकार की नीति इस्राएल में बहुत पहले राजाओं के समय - के इतिहास में हुआ करता था। मूसा की व्यवस्था में ईश्वरीय न्याय के अनुसार कोई भी पुत्र जो अपने "पिता की पत्नी" के साथ आंतरिक सम्बन्ध रखता वह दण्ड का पात्र होता था (लैव्यव्यवस्था 18:8; 20:11; व्यवस्थाविवरण 27:20) "पिता की पत्नी" का भाव दूसरी पत्नी या सौतेली माता को व्यक्त करता है, परन्तु पुत्र के वास्तविक माता को नहीं (देखें 1 इतिहास 5:1)।

कई वर्ष के बीत जाने पर, याकूब उन मामलों पर चुप रहा जिनके लिये उसे कड़ा कदम उठाना चाहिए था। यह वह मामला था जब शकेम ने दीना के साथ कुकर्म किया बाद के घटनाओं इन (34:5) और वह भी जब रुबेन बिल्हा के साथ सोया। बाद की घटनाओं में, जबकि **इस्राएल को मालूम हो गई**, कि उसने अपने जेठे पुत्र को अनुशासित करने के लिये कुछ नहीं किया। परन्तु अपने जीवन के अंतिम समय में, रुबेन को उसने अपने बिस्तर पर चढ़ने और उसे अपवित्र करने के लिये फटकार लगाई (49:4) 1 इतिहास 5:1 के अनुसार, रुबेन को बुरे काम का परिणाम अपना जन्म अधिकार खोकर चुकाना पड़ा।

याकूब के पुत्र (35:22-26)

22जब इस्राएल उस देश में बसा था, तब एक दिन ऐसा हुआ कि रूबेन ने जा कर अपने पिता की रखेली बिल्हा के साथ कुकर्म किया; और यह बात इस्राएल को मालूम हो गई। याकूब के बारह पुत्र हुए। 23उन में से लिआ: के पुत्र ये थे; अर्थात् याकूब का जेठा, रूबेन, फिर शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, और जबूलून। 24और राहेल के पुत्र ये थे; अर्थात् यूसुफ़, और बिन्यामीन। 25राहेल की दासी बिल्हा के पुत्र ये थे; अर्थात् दान, और नप्ताली। 26और लिआ: की दासी

जिल्पा के पुत्र ये थे: अर्थात् गाद, और आशेर; याकूब के ये ही पुत्र हुए, जो उससे पद्दनराम में उत्पन्न हुए।

आयतें 22-26. आयत 16 से 18 याकूब के सबसे छोटे बेटे के जन्म का विवरण देता है, जबकि आयत 22 उसके जेठे पुत्र के व्यभिचार के बारे में बताता है। अगली आयतों (35:22-26) में **याकूब के सभी बारह पुत्रों**[7] का जो उसकी चार पत्नियों से उत्पन्न हुए थे, एक सार मिलता है। लेखक ने पहले, पहली पत्नियों और उनके संतानों को सूची में शामिल किया: **लिआ के पुत्र: याकूब का जेठा, रुबेन, फिर शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, और जबूलून; और राहेल के पुत्र ये थे : अर्थात् यूसुफ़, और बिन्यामीन।** इनके बाद दूसरी पत्नियों के बच्चों की बारी आई, जिसकी शुरुआत में **राहेल की दासी बिल्हा के पुत्र ये थे; अर्थात् दान, और नप्ताली; और लिआ की दासी जिल्पा के पुत्र ये थे: अर्थात् गाद, और आशेर।** इसका विवरण संक्षिप्त में दिया गया है: **याकूब के ये ही पुत्र हुए, जो उससे पद्दनराम में उत्पन्न हुए।** इस सूची में बिन्यामीन का वर्णन अलग है, क्योंकि उसका जन्म कनान में हुआ था (35:16-18) हारान (पद्दनराम) में नहीं। जो विवरण दिया गया उसका अभिप्राय ठीक बिल्कुल उसी तरह नहीं था, बल्कि घराने के सभी लोगो को सूची में सामान्य रूप से शामिल करना ध्यान देने वाली बात थी ।इस विवरण में दीना को शामिल नहीं किया गया है क्योंकि इस प्रकार की वंशावली में स्त्रियों को शामिल नहीं किया जाता था। यदि उसकी कोई संतान थी[8], तो उसकी गिनती इस्राएल के गोत्रों के साथ जो कनान देश में आकर बस गए, नहीं किया जाता। पुराने नियम में, दीना के समान जब किसी जवान स्त्री का विवाह हो जाता था, तो उसके बच्चों की वंशावली उसके पिता से नहीं, बल्कि पति के घराने से चलती थी।

इसहाक की मृत्यु (35:27-29)

[27]याकूब मम्रे में, जो करियतअर्बा, अर्थात् हेब्रोन है, जहाँ अब्राहम और इसहाक परदेशी हो कर रहे थे, अपने पिता इसहाक के पास आया। [28]इसहाक की अवस्था एक सौ अस्सी वर्ष की हुई। [29]और इसहाक का प्राण छूट गया और वह मर गया, और वह बूढ़ा और पूरी आयु का हो कर अपने लोगों में जा मिला; और उसके पुत्र एसाव और याकूब ने उसको मिट्टी दी।

आयत 27. अंततः कई वर्ष के बीत जाने पर, **याकूब** अपने पिता के घर **मम्रे में, जो करियतअर्बा, अर्थात् हेब्रोन है, जहाँ अब्राहम और इसहाक परदेशी हो कर रहे थे**, आया। उसकी माता और उसकी धाय दोनों कि मृत्यु हो चुकी थी; और इसहाक बेर्शेबा से उत्तर की ओर चला गया, जहाँ पर वह रहा करता था जब याकूब ने घर छोड़ा था (28:10) एक लम्बी-प्रतीक्षा के बाद फिर से मिलने का समय आया, और याकूब को सुरक्षित उसके पिता के घर लाने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हुई (28:15, 21)।

आयत 28. इस समय तक, **इसहाक** बहुत बूढ़ा हो चुका था (देखें टिप्पणी 27:1, 2 पर) वचन इस ओर इंगित नहीं करता कि इसहाक की एक सौ अस्सी वर्ष की अवस्था में मृत्यु से पहले दोनों कितने समय तक इकट्ठा रहे।

आयत 29. पूरे विवरण का अन्त यह कहते हुए होता है कि, **इसहाक का प्राण छूट गया और वह मर गया, और अपने लोगों में जा मिला।** इस पूरे वृत्तान्त का अन्त उसी प्रकार है जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से बाद में कहा था, जब उसके मृत्यु का समय निकट था: "देख, तू तो अपने पुरखाओं के संग सो जाने पर है" (व्यव. 31:16) इस सन्दर्भ में, इसहाक की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी; इसलिये यह वचन बताता है वह "अपने लोगों में जा मिला।" दोनों बातों की घोषणा कहावत के रूप में मृत्यु के लिये हुआ है। अन्त में, वचन में लिखा है कि इसहाक बूढ़ा और **पूरी आयु का था** जब उसकी मृत्यु हुई। पिता की मृत्यु अकसर परिवार के लोगों को एक साथ मिलाती है, और यही इस पीढ़ी के दो भाइयों के साथ हुआ: **एसाव और याकूब** आये और इसहाक को **मिट्टी दी**। 35:29 की भाषा और अब्राहम की मृत्यु और गाड़े जाने के पिछले विवरण में समानता पायी जाती है (देखें टिप्पणी 25:7-10 पर) बाद में दी गई जानकारी से पता चलता है कि इसहाक को मकपेला की गुफा में मिट्टी दी गई (49:29-32), जो हेब्रोन में था।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के लिये समर्पण रखना (35:1-5)

बैक टू द फ्यूचर के नाम से बनी फिल्म में, मुख्य भूमिका निभाने वाला नायक अपना, अपने परिवार का और अपने मित्रों का बेहतर भविष्य बनाने के लिये बीते दिनों में पहुँच जाता है कि घटनाओं के क्रम को बदल दे। इसी अनुभव से होकर जाने में, याकूब को अपने मन में बीते दिन में जाना था और बेतेल में परमेश्वर के साथ हुई अपनी पहली भेंट को स्मरण करना था, तब जब वह अपने भाई एसाव के क्रोध से भाग रहा था। उसे उस अवसर पर परमेश्वर के साथ की गई वाचा को पूरा करना ज़रूरी था (28:20-22) ताकि वह और उसका घराना उस भविष्य का अनुभव हमेशा करें जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उससे अब्राहम और इसहाक का वंश होने के रूप में की थी (28:12-15)।

परमेश्वर के लिये समर्पित हो जाना। परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के लिये अपने आत्मिक समर्पण को स्मरण करने की ज़रूरत है। मनुष्य का स्वभाव होता है की वह अपने, प्रतिदिन के जीवन के वास्तविक और परमेश्वर के साथ किये गये वाचा के आत्मिक क्षेत्र दोनों में अपनी ज़िम्मेदारियों को भूल जाता है। जब याकूब एसाव के क्रोध से बचकर भाग रहा था, तब परमेश्वर ने बेतेल में उसे दर्शन दिया, उसके साथ रहने, उसे और उसके वंश को आशीष देने, उसकी ज़रूरतों की पूर्ति करने और उसे कनान में सुरक्षित लेकर आने की प्रतिज्ञा की (28:13-15)। परमेश्वर की प्रतिज्ञा के प्रति उत्तर में, यदि परमेश्वर ने अपनी उन प्रतिज्ञाओं को पूरा किया तो याकूब ने अपना जीवन समर्पण करने और अपने जीविका की आय

का दशमांश उसे देने की शपथ खाई (28:20-22) कई वर्षों पश्चात, जब याकूब हारान में था, तब परमेश्वर ने एक बार फिर इस पुरुष से बातें की और उसे स्मरण कराया कि वह "बेतेल का परमेश्वर" था और यह समय था कि याकूब हारान को छोड़कर अपनी जन्म भूमि को लौट जाए (31:13)।

यद्यपि याकूब कुछ समय के लिये कनान आया था, पर बेतेल वापस लौट जाने को अभी भी टाल रहा था। परमेश्वर ने उस पुरुष को शकेम में दर्शन दिया और कहा, "यहाँ से निकल कर बेतेल को जा, और वहीं रह; और वहाँ ईश्वर के लिये वेदी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया, जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था" (35:1) याकूब का परमेश्वर के पीछे चलने की शपथ के लिए आवश्यक था कि वह पूरी रीति से मूर्तिपूजा से फ़िर जाता। न तो वह और न ही उसके मंडली में से कोई पराए देवता की वेदी में आराधना या पराये देवताओं के किसी कार्य में शामिल हो सकता था। इस प्रकार के कार्य यहोवा को भावता नहीं था।

परमेश्वर के लोगों की दुःखद कहानी प्रायः दोहराई जाती रही: बहुतों ने अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्य बने रहने की शपथ खाई परन्तु वे परमेश्वर के साथ आज्ञाकारिता की अपनी उस शपथ को पूरा करना भूल गए या टाल दिया। इसका एक उदाहरण निर्गमन 24:1-8 में पाया जाता है, तब मूसा सिनै पर्वत से नीचे उतर आया और लोगों को परमेश्वर का वचन और उसकी विधियाँ कह सुनाया। इसके प्रति उत्तर में, इस्राएलियों ने कहा, "जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे" (निर्गमन 24:3) फिर, होमबलि (पश्चाताप के लिये; लैव्य. 1:1-9) और मेलबलि चढ़ाने के बाद, मूसा ने वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ कर सुनाया। उन्होंने, एक बार फिर स्वीकार किया, "जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे!" (निर्गमन 24:7)। परन्तु, हमेशा उनका समर्पण सुबह की ओस के समान था जो सूरज निकलते ही गायब हो जाता है (होशे 6:4) और जब मूसा सीनै पर्वत पर दस आज्ञा की दोनों तख्तियों को ले रहा था, तब लोगों ने सोने के बछड़े को दण्डवत किया और उसकी उपासना करने लगे। वे मनुष्य की बनाई मूरत को वह ईश्वर मानने लगे जो उन्हें मिस्र देश से छुड़ा ले आया है (निर्गमन 32:4, 8)।

वर्षों के बाद, भजनकार ने लगातार इस्राएल के अल्प विश्वास, अनाज्ञाकारिता, मूर्तिपूजा और परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करने के विषयों पर शोक व्यक्त किया। उनके पापों का मुख्य कारण परमेश्वर के अद्भुत कामों को भूल जाना बताया गया है (भजन 78:7-11; 106:7-14, 19-22) परमेश्वर ने याकूब को स्मरण कराया कि, जैसे अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर ने, उसके पिता और दादा को आशीष दी थी वह उसे भी आशीष देगा। बाद में, परमेश्वर ने याकूब को उसकी यात्रा में संग रहने और सुरक्षित घर लाने की प्रतिज्ञा की। इसलिये, याकूब को वापस बेतेल जाने और उसकी आराधना करने की अपनी शपथ को पूरा करना था (28:13-15; 31:13; 35:1)।

इसी प्रकार की चुनौती नए नियम में भी पायी जाती है। इब्रानियों का लगभग दो अध्याय 3 और 4; विश्वासियों का अविश्वास, टाल देना और परमेश्वर के लिये अनाज्ञाकारिता के खतरों के बारे में चेतावनी देते हैं। जो गलती इस्राएल ने पुराने नियम में की थी लेखक ने भाइयों को उसे दोहराने के लिये आगाह किया है। भजनकार के वचनों के साथ उसने कहा: "... 'अतः जैसा पवित्र आत्मा कहता है, यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को [इस्राएल जैसे] कठोर न करो, जैसा कि [परमेश्वर को] क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था'" (इब्रा. 3:7, 8)। परमेश्वर के लोग उसकी आज्ञा को टालने और "बुरा और अविश्वासी मन" रखने के लिये नहीं थे। इस प्रकार का व्यवहार विनाशपूर्ण हो सकता है, उन्हें अनाज्ञाकारिता की ओर ले जाता और वे परमेश्वर के स्वर्गीय विश्राम में प्रवेश करने में असफल हो जाते हैं (इब्रा. 3:11, 12, 18)।

पतरस ने कुछ ऐसे परमेश्वर के लोगों के बारे में वर्णन किया जिन्होंने "अंधे और धुंधले देखने वाले के समान" सच्चे मसीही होने के गुणों को नहीं बढ़ाया। उनकी आत्मिक उन्नति रुक गई क्योंकि वे "भूल गए" कि अपने "पिछले पापों" से कैसे अपने मन को शुद्ध करें (2 पतरस 1:8, 9) वे परमेश्वर की "बुलाहट और चुनाव" जैसी आशीष को भूल गए। प्रेरितों ने उन्हें इन गुणों के यत्न में लगे रहने के लिये सावधान किया ताकि वे कभी ठोकर न खाएँ (2 पतरस 1:10; ESV)। वह नहीं चाहता था कि वे अपने उद्धार को खो दे।

याकूब की भूलने और आज्ञाकारिता को टालने की समस्या उन लोगों की भी समस्या है जिनके बारे में पतरस ने बताया। परमेश्वर ने याकूब को बेतेल लौटने का स्मरण कराया क्योंकि, आज्ञा में देरी करके, परमेश्वर ने उसे क्यों बुलाया और आशीषित किया था यह भूलकर याकूब स्वयं को खतरे में डाल रहा था। परमेश्वर के साथ खाई शपथ को पूरा करने में लापरवाही दिखाने से, वह अपने घराने के सामने एक बुरा उदाहरण रख रहा था। याकूब को परमेश्वर की सेवा के लिये अपने समर्पण के बारे में गम्भीर होना ज़रूरी था।

स्वयं को शुद्ध करना और केवल परमेश्वर की आराधना करना। परमेश्वर ने याकूब को चार पत्नियों और बारह पुत्रों,[9] पशुओं का एक बड़ा झुण्ड और उनकी देखभाल के लिये सेवकों के साथ बहुतायत से आशीष दी। परन्तु कुलपति ने इन भेंटों को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि वह उनका पात्र था; इसके विपरीत, उसकी गलतियों और पापों के बावजूद भी परमेश्वर ने उसे आशीष दी। परमेश्वर की इस दया के प्रति उत्तर में, याकूब अपने बच्चों को सच्चे परमेश्वर के बारे में और उसकी आराधना कैसे करें जो उसे ग्रहणयोग्य हो, इन विषयों को सिखाता रहा होगा। उत्पत्ति के वचन बताते हैं कि इन ज़िम्मेदारियों को निभाने में वह या तो लापरवाह रहा या असफल रहा।

माता-पिता, विशेषकर पिता की हमेशा यही ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपने बच्चों के लिये अच्छा उदाहरण बने और उन्हें परमेश्वर के बारे में सिखाएं। पौलुस पिताओं को अपने बच्चों को "प्रभु की शिक्षा और चेतावनी में" आगे बढ़ाने के लिये सावधान करता है (इफि. 6:4; देखें कुलु. 3:21)। निःसंदेह, माताएँ भी

बच्चों के पालन पोषण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं परन्तु जब पिता इस मामले में कमज़ोर होते या घर पर नहीं होते हैं, पुत्र के भटक जाने तथा गैर कानूनी कार्यों में पड़ जाने का डर अधिक होता है।

परमेश्वर की बुलाहट के प्रति उत्तर में, याकूब अपने घराने को आदेश देते हुए कहता है, "अपने अपने को शुद्ध करो और अपने वस्त्र बदल डालो" (35:2) अपने शरीर को धोना और धुले वस्त्र पहनना परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की तैयारी और/या किसी के जीवन की नई शुरुआत करने का प्रतीक है, जैसे सीनै पर्वत पर इस्राएल के साथ हुआ था (निर्गमन 19:10-15) इसके अनुरूप, जैसे पाप कीचड़ के समान होता है जो हमें अशुद्ध करता है और चाहता है की हम परमेश्वर से दूर हो जाएँ (भजन 51:2, 7; यशा. 1:16; 2 कुरि. 7:1; 1 यूहन्ना 1:9) हमारा पुराना वस्त्र अपने बुरे व्यवहार और कार्यों के साथ हमारे पुराने पापों का नमूना होता है। दुर्भाग्यपूर्ण हमारी सारी धार्मिकता का कोई मूल्य नहीं होता है; यह ऐसा है मानो हम फटे पुराने, गंदे वस्त्र पहनकर परम पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े थे (यशा. 64:6) अपने अनुग्रह से, परमेश्वर हमें नए वस्त्र और नई आत्मिक शुरुआत करने का अवसर देता है। परमेश्वर की स्तुति का वर्णन करते यशायाह ने कहा,

> ... क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपनेआप को सजाता और दुल्हन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है (यशा. 61:10; देखें जकर्याह 3:1-5)।

नए वस्त्र पहनना एक प्रतीक है, जो क्षमा और नए शुरुआत को दिखाता है, जो कि नए नियम में भी प्रचलित है (लूका 15:22; प्रका. 3:18) पौलुस ने इन विषयों को विश्वास और मसीह में बपतिस्मा के साथ जोड़ा, जिसके द्वारा एक पापी परमेश्वर की संतान बन जाता है और मसीह को पहन लेता है (गला. 3:26, 27) आत्मिक दृष्टि में, एक व्यक्ति विशेष ने उसकी धार्मिकता को पहन लिया है (2 कुरि. 5:17, 21) यशायाह के समान प्रतिरूप का इस्तेमाल करते हुए, पौलुस ने कलीसिया को मसीह की दुल्हन कहा, जल का स्नान (बपतिस्मा), पवित्र और शुद्ध किया हुआ। जब मेमने के विवाह का भोज का समय आएगा, वह उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बना कर अपने पास खड़ी करेगा, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो (इफि. 5:25-27; प्रका. 19:7-9)।

जाना वहाँ जहाँ हम परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं। परमेश्वर की आशीषें उन पर होती हैं जो उसकी आराधना और सेवा करने के लिये अपना समर्पण रखते हैं। शिमोन और लेवी के द्वारा शकेम के पुरुषों की निर्मम हत्या और उनके नगर की लूट के बाद, याकूब डर गया कि कनानी लोग एक बड़ी सैन्य बल के साथ आयेंगे और उसके और उसके सेवकों पर चढ़ाई करेंगे, जिससे उनकी पूरी मंडली नष्ट हो जाएगी (34:30)। याकूब जानता था कि बेतेल लौटने में अब और देर नहीं कर सकते। उसे अपनी शपथ पूरी करना, वेदी का निर्माण करना और

परमेश्वर की आराधना करना ज़रूरी था। इसलिये उसने और मंडली के लोगों ने परमेश्वर से मेल करने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। अपने डर को भूलकर, याकूब जानता था कि उज्ज्वल भविष्य के लिये बेतेल और परमेश्वर के पास लौटना ही सही उपाय है। केवल उसे भरोसा रखना था कि परमेश्वर उसे और उसके लोगों को खतरे से बचाएगा और उनकी यात्रा को सफल करेगा (28:15) और बिल्कुल वैसा ही हुआ। 35:5, के अनुसार, "और उनके चारों ओर के नगर निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से "बड़ा भय" समा गया और उन्होंने याकूब के घराने का पीछा नहीं किया।

इसी प्रकार का भय और आतंक इस्राएलियों के मन में समा गया जब वे मिस्र से जंगल के मार्ग प्रतिज्ञा की भूमि की ओर यात्रा कर रहे थे। चारों ओर के देशों ने उन पर चढ़ाई नहीं की; वे काँप उठे और उनका मन पिघल गया (निर्गमन 15:13-16), जब हेशबोन के राजा सीहोन ने इस्राएलियों को कनान के मार्ग पर रोक लिया, तब परमेश्वर ने इस्राएलियों को आगे कूच करने के लिये, वहाँ के लोगों के मन में "थरथराहट और भय" समा दिया (व्यव. 2:24, 25) जब कनान की जीत का समय शुरू हुआ, तब यरीहो में राहाब ने इस्राएली भेदियों को छिपा रखा, उन पुरुषों से कहने लगी, "मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगों के मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं" (यहोशू 2:9)।

परमेश्वर के लोग अब तक कठिनाइयों से जूझ रहे थे; परन्तु इस्राएल के पास परमेश्वर की अनोखी वाचा थी, जो पहले अब्राहम को दी गयी थी कि, उसके वंश के लोग आकाश के तारागण के समान होंगे। परमेश्वर ने उससे कहा कि, चार सौ वर्षों के सताव और दासत्व के पश्चात, वह उन्हें बाहर निकाल लायेगा और प्रतिज्ञा की भूमि पर ले जायेगा, और वहाँ उन्हें बसा देगा (15:5-7, 13-21) परमेश्वर द्वारा कनान देश को उन्हें दे दिए जाने के पश्चात भी, उनके दिन अच्छे और बुरे होने के साथ जय और पराजय भी थे। परमेश्वर लगातार उन्हें आशीष देता रहा, परन्तु वे लगातार उसके विरुद्ध जाकर विपत्ति और मृत्यु को अपने ऊपर लाते रहे।

इस संसार में विपत्ति विभिन्न कारणों से, अच्छे और बुरे दोनों पर आती है। (1) आधारभूत तथ्य यह है कि, हम ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ कोई भी पाप और मृत्यु से नहीं बच सकता जिसकी शुरुआत अदन की वाटिका में हुई, तब आदम और हव्वा को बाहर निकाल दिया गया (2:15-17; 3:23, 24) ये दोष मानव जाति की दशा के अभिन्न अंग बने रहेंगे जब तक "अंतिम तुरही" फूँकी नहीं जाए और "अविनाश से मृत्यु को निगल नहीं लिया जाए" (1 कुरि. 15:50-58)। (2) कभी-कभी विपदा प्राकृतिक आपदा के कारण उत्पन्न होते हैं, जैसे कि भूकंप, आंधी-तूफ़ान और बाढ़। ऐसी शक्तियों को हम अपने सीमित बुद्धि और शक्ति से नियंत्रित नहीं कर सकते हैं। (3) कभी-कभी दुःख और मृत्यु किसी दुर्घटनावश आती है। यह बुरे या लापरवाही बरतने का परिणाम हो सकता है - ज़रूरी नहीं पापमय स्वभाव से हो - निर्णय जिसे हम गाड़ी चलाते या मशीन चलाते समय

लेते हैं। (4) दर्द और संकट का कारण दूसरों का व्यवहार भी हो सकता है चाहे जान बुझकर किया गया हो या अनजाने में। (5) स्वार्थी अभिलाषा और आदतें, चाहे हमारी हों या हमारे आस-पास के लोगों की, यदि उन्हें नियन्त्रण में रखा न जाए तो वे बड़ी भारी समस्या उत्पन्न कर सकती हैं।

कल का वायदा हमारे पास नहीं है; परन्तु कभी कभी परमेश्वर रहस्यमयी या नाटकीय ढंग अपने लोगों की रक्षा करने आता है और अपने वायदों को पूरा करता है, जैसे उसने याकूब और इस्राएल जाति के साथ किया। बाइबल में भी, ये असामान्य बात है और नियम नहीं। पकड़वाए जाने की रात यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है" (यूहन्ना 16:33)। सभी प्रेरितों को जिन्हें प्रभु ने महान आदेश दिए (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16), विश्वास किया जाता है कि यूहन्ना को छोड़कर, सभी की मृत्यु शहीद के रूप में हुई। निश्चय ही, यह दर्शाता है कि अच्छे लोगों के साथ बुरा होता है । महान संतों को हमेशा बड़ी पीड़ा से होकर गुज़रना पड़ता है। संसार ने देखा कि यीशु ने सबसे उत्तम जीवन जीया, जबकि रोमी क्रूस पर कीले ठोके जाने से पहले उसने सैनिकों से असहनीय कोड़ो की मार और घोर अपमान को सहा। परमेश्वर ने याकूब के समान अपने लोगों के लिये हमेशा सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों आशीषों का वायदा किया है; परन्तु आश्वासन नहीं दिया कि किसी को हृदय घात और दर्द में देख दया न दिखाए।

जब याकूब बेतेल को लौटा, उसने एक वेदी बनाई और परमेश्वर की आराधना की, उस स्थान का नाम एल-बेतेल रखा, जिसका अर्थ है, "बेतेल का परमेश्वर" (35:7) इस विशेष घड़ी के पश्चात, अगली आयत में लिखा है कि "दबोरा" रिबका की धाय मर गई (35:8) यह विश्वासयोग्य स्त्री, याकूब की माता की धाय, इस पुरुष की भी धाय हो सकती थी जब वह छोटा था। वह उससे घर की बड़ी सदस्य जानकर प्रेम करता होगा, और उसकी मृत्यु उसके लिये अवश्य ही बड़े शोक का कारण था।

इस क्षति की उदासी के बाद, परमेश्वर ने दोबारा प्रकट होते हुए याकूब को धैर्य दिया। उसने उस कुलपति की आशीषों को दोहराया और उसका नाम "याकूब" से बदल कर "इस्राएल" रख दिया (35:10)। इस मुलाकात पर, परमेश्वर ने स्वयं का उल्लेख "सर्वशक्तिमान ईश्वर" (אֵל שַׁדָּי, *एल शाद्दाए)* के रूप में किया, वही नाम जिससे उसने अपनी पहचान अब्राहम को दी थी (17:1) और जिस नाम का प्रयोग इसहाक ने 28:3 में किया था। इसके अतिरिक्त, उसने भूमि की प्रतिज्ञा की पुष्टि की और कहा कि याकूब से जातियों (राष्ट्रों) की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और राजा भी (35:11, 12)। जब वह ईश्वरीय दर्शन समाप्त हुआ, याकूब ने पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया, और उस पर अर्घ देकर तेल डाल दिया (35:14)। दूसरी बार, उसने उस स्थान को "बेतेल" बुलाया, जिसका अर्थ है "परमेश्वर का घर" (35:15; देखें 28:17)।

जैसे इस मण्डली ने अपनी यात्रा दक्षिण की ओर जारी रखी, बेतेल और

बैतलहम के बीच कहीं पर, राहेल को बहुत गम्भीर प्रसव पीड़ा हुई और उसने बिन्यामीन, याकूब की अंतिम संतान, को जन्म देते हुए अपने प्राण त्याग दिए। एक बार फिर, हम देखते हैं की उस कुलपति और उसके परिवार पर परमेश्वर की आशीष होने का अर्थ यह नहीं की उन्हें दुःखद घटनाओं से छूट मिल गई थी। याकूब ने अपनी चहेती राहेल को मृत्यु के कारण खो दिया।

परमेश्वर की आशीषें एक कष्टरहित जीवन की निश्चितता नहीं देती; इसके बजाय, परमेश्वर के लोगों के लिए सन्देश यह है की वह सदा हमारे साथ रहेगा। उसका संभाले रखने वाला अनुग्रह हमें थामे रखेगा, हमें निगल जाने वाली भयंकर परीक्षाओं के बावजूद। उसने वादा किया है कि "जगत के अंत तक (वह) सदा हमारे साथ रहेगा" (मत्ती 28:20); "उसने आप ही कहा है, 'मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा'" (इब्रा. 13:5)। परमेश्वर हमारे साथ खड़ा रहेगा, हमें सांत्वना देगा, शक्ति देगा, और उसके उद्देश्य पूर्ण करने के लिए हमें सक्षम करेगा (2 तीमु. 4:17; देखें भजन 23)।

प्रभु से प्रेम करना (35:1-4)

याकूब के वंशज बड़ी आशीषों का आनंद लेने वाले थे, जैसा की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, यदि वह प्रभु से प्रेम करते हैं, उसकी बात मानते हैं, और उसके साथ लिपटे रहते हैं। तो व्यवस्थाविवरण 30:20 कहता है, "... क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घजीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने अब्राहम, इसहाक. और याकूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा।" उस सन्दर्भ में, निर्जन प्रदेश में चालीस वर्ष के बाद, मूसा इस्राएल की अगली पीढ़ी को आदेश दे रहा था प्रभु को उनके सारे मन, सारे जीव, और सारी शक्ति से प्रेम करने का। उन्हें प्रभु की आज्ञाओं को अपने अपने बाल-बच्चों को रात-दिन सिखाना था, केवल उसी का भय मानते हुए और आराधना करते हुए (व्यव. 6:5-7, 13, 14)। अपनी मृत्यु से पूर्व मूसा ने, इस्राएलियों को स्मरण कराया कि उसने "जीवन और मरण, आशीष और शाप" को उनके आगे रखा है; उसने उनसे "जीवन को चुनने" का आग्रह किया ताकि वे जीवित रह सकें (व्यव. 30:19)।

सामान्य रूप से, लोगों ने मूसा द्वारा दी आज्ञाओं को मानने से या तो इनकार किया या उन्हें अनदेखा किया। भजन संहिता 78 का एक उपदेश उन समस्याओं को प्रकट करता है जिन्होंने इस्राएलियों के अधिकतर इतिहास में उन्हें त्रस्त करके रखा। भजन की शुरुआत में, प्रचारक ने परमेश्वर के शक्तिशाली कार्यों और मूसा की व्यवस्था की ओर संकेत किया, जिसे प्रभु ने अपने लोगों के मार्गदर्शन के लिए स्थापित किया था। उस भजनकार ने ज़ोर दिया परमेश्वर की उस आज्ञा पर कि पिता "उनके संतानों" को ये बातें सिखाए ताकि युवा पीढ़ी "परमेश्वर का भरोसा रखे" (भजन 78:4-7)। उसने उन्हें झिड़का की वे "अपने पितरों के समान न हों," जो कि लगातार "हठीले और झगड़ालू" रहे थे और अपने मनों और आत्माओं को "परमेश्वर की ओर सच्चा" रखने से इनकार किया था

(भजन 78:8)। निर्जन प्रदेश में इस्राएल के पापों पर मनन करने के बाद, भजनकार "पवित्र देश" में उनके बर्ताव की ओर रुख करता है (भजन 78:54), जहाँ वे उस सबक को भूल गए जो उनके पिताओं ने अति विलम्ब से सीखा था। परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध अपने कई आरोप लगाने के बाद, लेखक ने कहा की उन्होंने "परमप्रधान परमेश्वर ... से बलवा किया था" और "ऊंचे स्थान बनाकर ... और खुदी हुई मूर्तियों से ... उसको रिस दिलाई" (भजन 78:56-58)।

भजन में वर्णित कई पाप और समस्याएँ याकूब के जीवन में भी शामिल थे: वह एसाव के जन्मसिद्ध अधिकार और मृत्यु शैय्या की आशीष की लालसा में स्वार्थी और निर्लज्ज था, और वह इस बात को लेकर असंवेदनशील था की उसने अपने छल और धोखे से अपने भाई और पिता को कितनी चोट पहुँचाई थी। उस पर इस बात का कोई प्रभाव नहीं था कि उसके लाड़लेपन के कारण परिवार में कितना टकराव हुआ था। हालाँकि हमें कोई संकेत नहीं दिया गया है की याकूब झूठे देवताओं को पूजता था, परन्तु उसके जीवन के अधिकतर भाग में प्रभु का प्रथम स्थान नहीं रहा था। मुख्य रूप से संकट के समय में ही उसने परमेश्वर को पुकारा था। जब उसने एसाव से मेल-मिलाप कर लिया, तब वह अपने परिवार के साथ कुछ समय के लिए सुक्कोत में, और फिर शकेम में बस गया। जब उसकी बेटी दीना के साथ कुकर्म हुआ, वह क्रोधित नहीं हुआ परन्तु निष्क्रिय रहा; उसने शकेम और हमोर द्वारा लाए विवाह के प्रस्ताव की बातचीत में कोई भाग नहीं लिया। इन सब वर्षों के पश्चात, याकूब ने स्पष्ट रूप से अपने पुत्रों पर अपना प्रभाव और नियंत्रण काफ़ी हद्द तक खो दिया था। निश्चित रूप से, उन्हें उसके हाथ से अनुशासन पाने का कोई डर नहीं था, और स्वाभाविक रूप से उसके बाद उनके अन्दर उसके लिए कोई आदर नहीं बचा था।

यह अच्छा है, की अध्याय 35 में, उस कुलपति ने अंततः कमान अपने हाथ में ली और अपने परिवार और सेवकों को बताया - जिनमें शकेम के बंधक भी शामिल थे - की प्रभु ने उससे क्या प्रतिज्ञा की थी और उसके लिए क्या किया था। याकूब में इस परिवर्तन के साथ, उसको आवश्यकता थी कि उसका परिवार एक नई शुरुआत करे सच्चे परमेश्वर के साथ एक सही संबंध में जुड़ने के लिए। उन्हें अपने आपको झूठे देवताओं से मुक्त करना, अपने आपको पवित्र करना, और स्वच्छ कपड़े पहनना था ताकि उचित तरीके से प्रभु की आराधना और सेवा कर सकें (35:2)। याकूब ने ज़ोर दिया कि ये कार्य आवश्यक थे इससे पहले की वे बेतेल जाकर परमेश्वर की आराधना के लिए वेदी बनाएं, जिसने संकट के समय में उसको उत्तर दिया था और उसके साथ रहा वह जहाँ भी गया उन वर्षों में (35:3)। इतने लम्बे समय तक प्रभु की आशीषों और विश्वसनीयता के विषय की इस गवाही ने याकूब के समूह को सहकार्य करने और अपनी मूर्तियों को त्यागने के लिए मना लिया (35:4)। अब वे बेतेल की शेष यात्रा के लिए तैयार थे।

समाप्ति नोट्स

[1]अब्राहम के लिए परमेश्वर की आज्ञा यह थी कि वह अपने पुत्र का बलिदान करे (22:2) जिसके फलस्वरूप एक वेदी का निर्माण होता है। परन्तु, वेदी के निर्माण की आज्ञा बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं दर्शायी गयी है। [2]गोर्डन जे. वेन्हम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिब्लिकल कमेंटरी, वोल. 2 (डालस: वर्ड बुक्स, 1994), 324. [3]क्योंकि राहेल मर गई और उसे बिन्यमीन की भूमि सेलसह में मिट्टी दी गई, इसलिए परम्परा के अनुसार यह माना जाना कि वह स्थान बैतलहम से बाहर की ओर है, सही नहीं है। [4]देखें जी. हरबर्ट लिविंग्स्टन, "אָוֶן," *TWOT* में, 1:23. इसी घटना के लिये, देखें 1 शमूएल 4:19-22. [5]एल्मर ए. मार्टेन्स, "בִּנְיָמִין," *TWOT* में, 1:114. मार्टेन्स ने "दक्षिण का पुत्र" की सम्भावना भी व्यक्त की। इसका अभिप्राय इस सच्चाई से है कि याकूब का घराना दक्षिण की ओर यात्रा पर था और बिन्यामीन का जन्म भी दक्षिण में हुआ था (जबकि इसके विपरीत उसके भाइयों का जन्म हारान में हुआ था) परन्तु, "दाहिने हाथ का पुत्र" का अर्थ "मेरा शोक मूल पुत्र" से बिल्कुल अलग है। [6]जॉन टी. विलीस, *जेनेसिस*, द लीविंग वर्ड कमेंटरी (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पब्लिशिंग कंप., 1979), 372. [7]इसी तरह, नाहोर और इश्माएल अपने अपने बारह पुत्रों के पिता कहलाए (22:20-24; 25:12-18)। [8]अध्याय 34 में दीना से कुकर्म के पश्चात उसके बारे में दूसरी बार केवल 46:15 में लिखा गया है। कोई भी वृत्तान्त उसके विवाह या बच्चों के बारे में नहीं बताता। हो सकता है उसने "अकेले जीवन यापन" किया हो, जिस प्रकार कुकर्म किये जाने के पश्चात तामार ने किया (2 शमूएल 13:20)। [9]याकूब और उसके घराने ने जब तक शकेम को नहीं छोड़ा बिन्यामीन का जन्म नहीं हुआ (35:4), वह स्थान बेतेल और बैतलहम के बीच कहीं था (35:16-19)।